(c) if so, how much the country will loss in terms of foreign exchange by such borrowings?

THE PEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF FINANCE AND DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF EXTERNAL AFFAIRS (SHRI DIGVIJAY SINGH): (a) No, Sir. Indian banks, financial institutions and other institutional borrowers continue to have access to international money markets at terms consistent with India's credit rating.

(b) Yes, Sir.

(o) Borrowings in foreign exchange are approved taking into account the cost at which they are available and our own needs, so as to enable essentia] imports to be made, which would otherwise not be possible due to the trade gap. The question of loss on account of such borrowings therefore does not arise since the imports made through such borrowings are meant to add to the growth of the gross national product and to the exportable surplus.

चावल के सौदे के संबंध में केन्द्रीय जांच ब्यूरो की रिपोर्ट पर कार्यवाही

885. सरदार जगजीत सिंह अरोड़ा : क्या वाणिज्य मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार ने वर्ष 1985 में चावल-सौदे में केन्द्रीय जांच ब्यूरो द्वारा पाई गई अनियमितताओं पर आवश्यक कार्रवाई न करने के लिये संबंधित अधिकारियों के विरुद्ध कार्रवाई करने का निर्णय लिया है ; और

(ख) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है ?

वाणिज्य मंत्रालय में उपमंत्री (श्री शांतिलाल पुरुषोत्तमदास पटेल): (क) और (ख) एस टी सी द्वारा दिनांक 6–3–1985 को आबूधाबी म्यूनिसिपलिटी के लाख 7500 मीं. टन बासमती चावल के निर्यात के लिये हस्ताक्षरित संविदा के मामले में सी बी आई ने संबंधित मुख्य विपणन प्रबंधक के खिलाफ बड़ी दंडात्मक कार्रवाई करने और एस. टी सी के कुछ अन्य अधिकारियों के खिलाफ मामूली दंडात्मक कार्रवाई करने की सिफारिश की थी। इस बारे में नियमित रूप से विभागीय वैधानिक कार्रवाई की गई। जांच रिपोर्ट/स्पष्टीकरणों पर पर्याप्त विचार करने के बाद मुख्य विपणन प्रबंधक पर "निंदा" (सेंसर) का दंड लगाया गया और बाकी लोगों को दोषमुक्त कर दिया गया।

बोकारो इस्पात संयंत्र का विस्तार

886. **श्री शंकर दयाल सिंह** : क्या इस्पात और खान मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) बोकारो स्टील लिमिटेड की वर्तमान उत्पादन क्षमता कितनी है और क्या इसके विस्तार का कोई प्रस्ताव है ; और

(ख) यदि हां, तो उसका ब्यौरा क्या है ?

इस्पात और खान मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री बलवराज पाटिल) : (क) और (ख) बोकारो इस्पात कारखाने में संपरिष्कृत इस्पात की वर्तमान उत्पादन क्षमता 40 लाख मी० टन वार्षिक है। इस समय इसका और अधिक विस्तार करने का कोई प्रस्ताव नहीं है।

राष्ट्रीय वस्त्र निगम के अन्तर्गत चलने वाली मिलें

887. **श्री शंकर दयाल सिंह** : क्या वस्त्र मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) वर्तमान में राष्ट्रीय वस्त्र निगम के अन्तर्गत चलने वाली मिलों की संख्या कितनी है और उनकी अलग-अलग उत्पादन क्षमता कितनी है;

(ख) उक्त मिलों द्वारा उत्पादित वस्त्रों की बिक्री के लिये क्या-क्या उपाय किये गये हैं ; और

(ग) क्या यह सच है कि राष्ट्रीय वस्त्र नि म के पास बहुत बड़ी मात्रा में वस्त्रों का भंडार जमा हो गया है; यदि हां, तो इस संबंध में ब्यौरा क्या है ?

वस्त्र तथा खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्री(श्री हुकुमदेव नारायण यादव) :(क) इस समय, राष्ट्रीय वस्त्र निगम 109 राष्ट्रीय-कृत और 15 प्रबंधित मिलों का प्रबंध देख रहा है। इन मिलों की तकुओं तथा करघों संबंधी सहायक निगमवार स्थापित और अधिकृत क्षमता को दर्शाने वाला एक विवरण संलग्न है । (नीचे देखिए)

(ख) एन०टी०सी० द्वारा उत्पादित वस्त्रों की बिक्री निम्नलिखित माध्यमों से की जाती है:–

1. सरकार, सरकारी क्षेत्र और अन्य संस्थागत खरीदार;

2. निर्यातकों;

3. एन०सी०सी०एफ०, अन्य सहकारी संस्थान और उचित दर दुकानें ;

4. एन०टी०सी० के खुदरा बिक्री केन्द्र ; और

5. डीलरों तथा एजेंटों की मार्फत स्थानीय तथा देहाती बाजार ।

(ग) जी नहीं । बाजार यार्न और कपड़े का कुल तैयार स्टाक 30–9–90 की स्थिति अनुसार एन०टी०सी० मिलों में 31 दिनों की बिक्री के लिये ही है, जो 39 दिनों की बिक्रियों के मानदंड से काफी कम है ।

विवरण

एन० टी० सी०सहायक निगम-वार के अधीन वस्त्र मिलों के तकुओं और करघों की स्थापित तथा अधिकृत क्षमता को दर्शाने वाला विवरण

क्र०सं०	सहायक निगम/एकक	तकुए		करघे	
		स्थापित	अधिकृत	स्थापित	अधिकृत
1	2	3		4	
(क)	राष्ट्रीयकृत एकक				
1.	एन०टी०सी /(डी०पी०आर०) लि०	172632	170097	992	9 '6
2.	एन०टी०सी०(म०प्र०) लि०	195960	195960	3756	3756
3.	एन०टी०सी०(उ०प्र०) लि०	346320	277972	4133	3051
4.	एन०टी०सी०(सा०म०) लि०	390772	369556	6864	6011
5.	एन टी०सी०(म०ना) लि०	276196	273796	5606	5606
6.	एन०टी सी०(गु ज)लि०	306916	289751	6107	5994
7.	एन०टी०सी०(एपीकेकेव एम) लि०	455228	445628	2180	1644
8.	एन०टी०सी०(टी०एन०पी०)लि०	471236	471236	1102	1102

1	2	3		4	
9.	एन०टी०सी० (डब्ल्यू०बी०ए०टी० ओ०) लि०	336372	304424	3185	2194
	उप-योग (क)	2951632	2798420	33925	30334
(ख)	**प्रबंधित एकक**				
1.	लक्ष्मी रतन एवं ग्रथर्तन	100435	63981	2023	1516
2.	टी.ओ.एम. (मुम्बई)	728904	393140	11131	6359
	उप-योग (ख)	829340	457121	13154	7875
	कुल योग (क+ख)	3780972	3255541	47079	38209
		(3917858)	(3328227)	(49653)	(41313)

कोष्ठकों में आंकड़े : सितम्बर, 89 अनुसार स्थिति ।

देश में रेशम विज्ञान केन्द्र और रेशम का उत्पादन

888. **श्री शंकर दयाल सिंह** : क्या वस्त्र मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) इस समय देश के किन-किन क्षेत्रों में रेशम उत्पादन केन्द्र चल रहे हैं तथा उनकी उपलब्धि क्या है ; और

(ख) पिछले तीन वर्षों के दौरान हुए रेशम के उत्पादन का ब्यौरा क्या है ?

वस्त्र तथा खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्री (श्री हुकुमदेव नारायण यादव) : (क) केन्द्रीय रेशम बोर्ड (सी०एस०बी०) के पास रेशम की विभिन्न किस्मों को विकसित करने के लिये निम्नोक्त मुख्य अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान हैं:–

(1) केन्द्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, मसूर, कर्नाटक ।

(2) केन्द्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, बरहामपुर, प० बंगाल ।

(3) केन्द्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, रांची, बिहार ।

(4) केन्द्रीय रेशम प्रौद्योगिकी अनुसंधान संस्थान, बेंगलूर, कर्नाटक ।

उपरोक्त संस्थानों में क्षेत्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान स्टेशन का एक नेटवर्क है (सूची विवरण के रूप में संलग्न है) । इसके अलावा सारे देश में अनुसंधान उपलब्धियों का प्रचार करने के लिये अनुसंधान विस्तार केन्द्र भी है जो बोर्ड के विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन भी करते हैं ।

बोर्ड के संस्थान में उन्नत शहतूती किस्में जैसी (एस–799, एबी–763, एस श्रेणी, के 2 आदि) शामिल है और गैर शहतूती किस्मों के विकास के लिये उपयुक्त कृषि अर्थव्यवस्था के व्यवहार को भी विकसित करते हैं इसके अलावा उन्नत रेशम रीलिंग चरखा